वर्तमान समय में भूमंडलीकरण की आर्थिक प्रासंगिकता

डॉ. केशव देव सुनेरिया

(सहायक प्राध्यापक) अर्थशास्त्र विभाग

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

निवाड़ी (म.प्र.)

मुख्य बिन्दु–

मनोरंजन, वास्तविक, प्रभावित, अंतर्क्रिया, इंजीनियरों, महासागर

वस्तुएं जिन्हें हम अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं। भले ही वे आवश्यक हों जैसे भोजन, कपड़े, फर्नीचर, बिजली का सामान या दवाइया अथवा आराम और मनोरंजन की वस्तुएँ आदि। इनमें से कई भूमंडलीय आकार के नेटवर्क से हम तक पहुचती हैं। कच्चा माल किसी एक देश से निकाला गया हो सकता है। इस कच्चे माल पर प्रक्रिया करने का ज्ञान किसी दूसरे देश के पास हो सकता है और इस पर वास्तविक प्रक्रिया किसी अन्य स्थान पर हो सकती है, और हो सकता है कि उत्पादन के लिए पैसा एक बिल्कुल अलग देश से आया हो, ध्यान दीजिए कि विश्व के विभिन्न भागों में बसे लोग किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उनकी परस्पर निर्भरता केवल वस्तुओं के उत्पादन और वितरण तक ही सीमित नहीं है। वे एक दूसरे से शिक्षा, कला और साहित्य के क्षेत्र में भी प्रभावित होते हैं। देशों और लोगों के बीच व्यापार, निवेश, यात्रा, लोक संस्कृति और अन्य प्रकार के नियमों से अंतर्क्रिया भूमंडलीकरण की दिशा में एक कदम है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में देश एक दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच की दूरिया घट जाती हैं। एक देश अपने विकास के लिए दूसरे देशों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए सूती कपड़े के उद्योग में महत्त्वपूर्ण नामों में से एक, जापान, भारत या अन्य देशों में पैदा हुई कपास पर निर्भर करता है। काजू के अंतर्राष्टरीय बाजार में प्रमुख, भारत, अफ़्रीकी देशों में पैदा हुए कच्चे काजू पर निर्भर करता है। हम सब जानते हैं कि अमरीका का सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग किस सीमा तक भारत और अन्य विकासशील देशों के इंजीनियरों पर निर्भर करता है। भूमंडलीकरण में केवल वस्तुओं और पूजी का ही संचलन नहीं होता अपितु लोगों का भी संचलन होता है। भूमंडलीकरण के प्रारंभिक रूप भूमंडलीकरण कोई नई चीज नहीं है। लगभग 200 ई– पूर्व से 1000 ई– तक पारस्परिक क्रिया और लंबी दूरी तक व्यापार सिल्क रूट के माध्यम से हुआ। सिल्क रूट मध्य और दक्षिण–पश्चिम एशिया में लगभग 6000 कि–मी तक फैला हुआ था और चीन को भारत, पश्चिमी एशिया और भूमर्ड्रोय क्षेत्र से जोड़ता था। सिल्क रूट के साथ वस्तुओं, लोगों और विचारों ने चीन, भारत और यूरोप के बीच हजारों कि–मी की यात्रा की। 1000 ई– से 1500 ई– तक एशिया में लंबी–लंबी यात्राओं द्वारा लोगों में वैचारिक आदान–प्रदान होता रहा। इसी दौरान हिंद महासागर में समुद्रीय व्यवस्था को महत्त्व मिला।

दक्षिण–पूर्व एशिया और मध्य एशिया के बीच समुद्री मार्ग का विस्तार हुआ। केवल वस्तुओं और लोगों ने ही नहीं अपितु प्रौद्योगिकी ने भी विश्व के एक छोर से

दूसरे छोर तक की यात्रा की। इस अवधि में भारत न केवल शिक्षा एवं अध्यात्म का केंद्र था अपितु यहाँ धन–दौलत का भी अपार भंडार था। इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था जिससे आकर्षित होकर विश्व के अन्य भागों से व्यापारी और यात्री यहाँ आए। चीन में मंगोल शासन के दौरान कई चीनी आविष्कार जैसे बारूद, छपाई, धमन भट्टी, रेशम की मशीनें, कागज की मुद्रा और ताश यूरोप में पहुचे। वास्तव में इन्हीं व्यापारिक संबंधों ने आधुनिक भूमंडलीकरण का बीजारोपण किया।

शोध प्रपत्र

प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु, सेवा, पूँजी एवं बौद्धिक सम्पदा का अप्रतिबन्धित आदान–प्रदान हो भूमण्डलीकरण कहलाता है। भूमण्डलीकरण तभी सम्भव है जब ऐसे आदान–प्रदान के मार्ग में किसी देश द्वारा अवरोध उत्पन्न नहीं किया जाये और इन्हें कोई ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था संचालित करे जिसमें सभी देशों का विश्वास हो और जो सर्वानुमति से नीति–निर्धारक सिद्धान्तों का अनुसरण करे। समान नियम के अनुशासन में रहकर जब सभी देश अपने व्यापार और निवेश का संचालन करते हैं तो स्वाभाविक रूप से वह एक ही धारा द्वे प्रवाहित होते हैं और यही भूमण्डलीकरण है।

भारत की नवीन आर्थिक नीतियों में एक नीति व्यवस्था के भूमण्डलीकरण की है। इसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ाव करना है। **इसके अन्तर्गत सभी वस्तुओं के आयात की खुली छूट सीमा शुल्क में कमी, विदेशी पूँजी के मुक्त प्रवाह की अनुमति, सेवा क्षेत्र विशेषकर बैंक, बीमा तथा जहाजरानी क्षेत्रों में विदेशी पूँजी के निवेश की छूट तथा रुपये को पूर्ण परिवर्तनीय करना इत्यादि उपायों का समावेश किया गया है। यह उपाय एक बार में ही लागू किये जाने वाले उपाय नहीं हैं बल्कि इन्हें विभिन्न कारणों में लागू किये जाने की बात कही गयी है।**[p]

अन्तर्राष्ट्रीय विदेश नीति से सम्बन्धित एक अमरीको पत्रिका के अनुसार भूमण्डलीकरण के मामले में भारत अभी बहुत पीछे है। ए. टी. कीमी नाम को इस पत्रिका द्वारा जिन चुनिन्दा 50 विकसित एवं अल्पविकसित राष्ट्रों को भूमण्डलीकरण के स्तर की जाँच के लिए सर्वेक्षण में शामिल किया है इनमें भारत का स्थान 49वां है। अतः भारत में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में तेजी लाने की बहुत आवश्यकता है। भूमण्डलीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक देश कुछ मुखी आर्थिक सुधारों का कार्यक्रम क्रियान्वित करे। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय एवं वित्तीय संस्थाओं द्वारा कुछ निदेशक सिद्धान्त एवं कार्यक्रम बनाये गये है प्रकार है

- राजकोषीय अनुशासन।
- शिक्षा स्वास्थ्य एवं बुनियादी क्षेत्र में अधिक निवेश के लिए सरकारी व्यय में वृद्धि।
- कर के आधार को विस्तृत करने तथा सीमान्त कर की दर में कमी करके कर प्रणाली में सुधार।
- बाजार की शक्तियों द्वारा ब्याज की दरों का निर्धारण
- प्रतिस्पर्द्धात्मक विनिमय दर
- व्यापार का उदारीकरण अर्थात् मात्रात्मक प्रतिबन्धों के स्थान पर ज्यून एवं एक सीमा शुल्क
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए दरवाजों को खुला रखना।
- राजकीय क्षेत्र के उपक्रमों में विनिवेश और नये निवेश में निजी क्षेत्रको प्रमुख द्वारा निजीकरण को प्रोत्साहन
- विनियमन की प्रक्रिया अपनाकर ऐसे नियमों को समाप्त करना जो व्यापार, निवेश तथा भतिस्पर्द्धा के मार्ग में बाधक है, लेकिन उन प्रतिबन्धों को जारी रखना जो सुरक्षा, पर्यावरण तथा उपभोक्ता संरक्षण के लिए आवश्यक है।
- सम्पति के अधिकारों को कानूनी संरक्षण प्रदान करना।
- नीतिगत परिवर्तन करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के निर्देशों का पालन करना।।
- संस्थागत एवं संरचनात्मक सुधार करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा
- आर्थिक क्रियाओं में पारदर्शिता

उपर्युक्त कार्यक्रमों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का तेजी से भूमण्डलीकरण किया जा है। भूमण्डलीकरण और निजीकरण सहित आर्थिक सुधारों के अन्य कार्यक्रम भी लागू किये रहे हैं। कुछ क्षेत्रों

की उपलब्धियां उत्साहवर्धक रही है। विदेशी मुद्रा का भार अभूतपूर्व तक पहुंच गया है। निर्यात में वृद्धि हुई है। यद्यपि हाल के वर्षों में निर्यात और कृषि की विकास दरों में गतिरोध उत्पन्न हो गया और विदेशी व्यापार का घाटा बढ़ने लगा परन्तु स्थिति सुधरने लगी है।

भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत सरकार आर्थिक क्रियाओं पर लगे हुए अनेक प्रतिबन्धों से तो पूर्ण रूप से हटा लेती है या फिर कुछ सीमा तक मुक्त कर देती है। उदारीकरण से आशय है रू सरकारी नियमों एवं प्रक्रियाओं में छूट देना। उदारीकरण की प्रक्रिया तभी है जब उस देश में निर्जीकरण एवं वैश्वीकरण की क्रियाएँ भी अपनायी जायें निजीकरण एवं उदारीकरण दोनों को एक ही अर्थ में देखा जा सकता है।[पप]

आर्थिक सुधारों के तारतम्य में सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या 17 से मटाकर 4 कर दी गयी है। विदेशी प्रौद्योगिकी को अपनाने की प्रक्रिया अब पहले से आसान है। इसका उद्देश्य प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का सृजन करना है। लाइसेन्सिंग के माध्यम से आयात पर नियन्त्रण अब नहीं रहा। पूँजीगत वस्तुओं और कच्चे माल का आयात अब पहले की तुलना में सस्ता है। आयात शुल्क भी कम कर दिया गया है। तस्करी को रोकने के लिए सोने–चांदी के आयात को सस्ता कर दिया गया है।

भारत में निजीकरण की प्रगति विगत कुछ वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, निजीकरण, विराष्ट्रीयकरण, विनियमन, विनियन्त्रण, विनिवेश तथा आर्थिक छूटों को प्रवृत्तियों तेजी से विकसित हुई है। अब तो सरकार का रुख निजी उपक्रमों के प्रति काफी उदार बना हुआ है। नवीन औद्योगिक नीति, 1991 के बाद से आर्थिक अंकुशों, औद्योगिक नियन्त्रणों व बहुत त–से आर्थिक प्रतिबन्धों के बोझ को सरकार ने समाप्त करने का निर्णय लिया है। **भारत में निजीकरण का विचार जनता सरकार के सत्तारूढ़ होने के साथ (सन् 1977 से) प्रारम्भ हुआ जब यह प्रस्तावित किया गया कि हानि पर चलने वाले सार्वजनिक उपक्रमों को बन्द कर दिया जाये अथवा धीरे–धीरे निजी क्षेत्र को सौंप दिया जाये।**[पपप]

राजीव गांधी की सरकार में वित्तमंत्री के रूप में विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत में उदारीकरण के प्रथम उद्घोषक थे। तत्पश्चात् राष्ट्रीय मोर्चा सरकार तथा बाद वाली केन्द्र में सत्तारूढ़ हुई सभी

सरकारों ने इसी भूमण्डलीकरण विचारधारा को आगे बढ़ाया। अगस्त, 1991 के बाद से देश में भूमण्डलीकरण तथा निजीकरण की प्रक्रिया नही तेजी से आगे बढ़ी है। वर्तमान में भारत आर्थिक उदारीकरण एवं निजीकरण के मार्ग पर तेजी मे बढ़ रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में आज कोई क्षेत्र नहीं है जिसे निजी क्षेत्र के उद्यमियों द्वारा संचालित नहीं किया जा रहा है। विश्व के विकसित राष्ट्रों के आर्थिक दबाव के फलस्वरूप भी भारत में निजीकरण को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है। भारत में पिछले कुछ वर्षों में निजीकरण की दिशा में जो कदम उठाये गये हैं और इस क्षेत्र में जो नयी प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत हुई है।

सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योग वर्गों की संख्या में कमी नवीन औद्योगिक नीति, 1991 में भूमण्डलीकरण व निजीकरण को बढ़ावा देने के क्रम में इनकी संख्या घटाकर 8 कर दी गयी जिसे 1993 में पुनः घटाकर 6 हो कर दिया गया। वर्तमान में तो यह संख्या घटाकर कर दी गयी है। **अब सुरक्षा सामग्री, आणविक ऊर्जा, रेल परिवहन एवं आणविक ऊर्जा आदेश 1993 को अनुसूची में शामिल खनिज पदार्थ सम्बन्धी उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित है। इसमें प्रत्येक विषय पर विचार कर निजी क्षेत्र को भागीदारी की अनुमति दी जा सकती है। इस सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या को कम कर निजीकरण की ओर कदम बढ़ाया है।**[पअ]

साइसेन्स की अनिवार्यता वाले उद्योगों की संख्या में भारत सरकार द्वारा देश में भूमण्डलीकरण को बढ़ावा देने के लिए के लिए लाइसेन्स लेने की अनिवार्यता को धीरे–धीरे कम किया जा रहा है। **1991 की मौद्योगिक नीति में 18 उद्योग वर्ग ऐसे थे जिनको प्रारम्भ करने के लिए लाइसेन्स लेना अनिवार्य था। 1998–99 में इस संख्या को घटाकर 5 कर दिया गया है। भविष्य में लाइसेन्स लेने की अनिवार्यता को सरकार समाप्त करने का प्रयास कर रही है।**[अ]

सार्वजनिक उपक्रमों की अंश पूँजी का विनिवेश भारत सरकार ने निजीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम यह उठाया है कि कुछ सार्वजनिक उपक्रमों की अंश पूँजी को जनता में विनिवेश किया है। सरकार को 2000–01, 2001–02 तथा 2002–03 के दौरान कुल 10,941 करोड़ रुपये की राशि केन्द्र सरकार को प्राप्त हुई थी। वर्ष 2003–04 के दौरान प्राथमिक बाजार में समता अंश पूँजी के

सार्वजनिक निर्गमों से रिकॉर्ड 17,665 करोड़ रुपये की उगाही हुई है।

वर्तमान समय में पूरे में विश्व में बहुत तेजी से भूमण्डलीकरण हो रहा है जिस कारण से समस्त विश्व में एक नया औद्योगिक प्रारूप तैयार हुआ है। भूमण्डलीकरण के द्वारा भारत के सभी उद्योग प्रभावित हुये है जिससे बहुत से लोगों को आर्थिक लाभ हुआ है, इसके साथ–साथ नयी नीतियों वितीय से परिचित हुये है।

संदर्भ सूची

- *कोली एल.एन. भारतीय आर्थिक समस्याएँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण 2007, पृ. 177*
- *कोली एल.एन. भारतीय आर्थिक समस्याएँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण 2007, पृ. 178*
- *कोली एल.एन. भारतीय आर्थिक समस्याएँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण 2007, पृ. 178*
- *कोली एल.एन. भारतीय आर्थिक समस्याएँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण 2007, पृ. 179*
- *कोली एल.एन. भारतीय आर्थिक समस्याएँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण 2007, पृ. 180*